नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता : गांधी एवं धर्मपाल की सभ्यता दृष्टि' पर

हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटित

समृद्धि, संस्कृति सिखाता है भारत - के. एन. गोविंदाचार्य

वर्धा, 18 फरवरी 2020 : सुविख्यात विचारक के. एन. गोविंदाचार्य ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता : गांधी एवं धर्मपाल की सभ्यता दृष्टि' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में संबोधित करते हुए कहा कि भारत नैसर्गिक रूप से विश्व का गुरु है । भारत की पहचान है कि वह संसार को

समृद्धि और परंपरा का पाठ पढ़ाता है । भारत की इन विशेषताओं को अपनी तर्कबुद्धि से संसार को अवगत कराने की आवश्यकता है । श्री गोविंदाचार्य विश्वविद्यालय के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, शिक्षा विद्यापीठ एवं महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 18 और 19 फरवरी को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रजनीश कुमार शुक्ल ने की। इस अवसर पर उदघाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध गांधीवादी श्री कनकमल गांधी, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार उपस्थित थे। कस्तूरबा सभागार, श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन में मंगलवार को संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया।

श्री गोविंदाचार्य ने कहा कि भारत की अपनी एक समृद्ध परंपरा है और व्यास इसके शाश्वत सत्य के नायक है। अपनी सभ्यता और विरासत को समझने के लिए हम सनातन परंपरा के मार्ग पर चलते हैं। भारत संसार को समृद्धि और संस्कृति सिखाता रहा है और रहेगा । उनका कहना था कि भारत की अतुलनीयता को संसार को अपनी तर्कबुद्धि से समझाना होगा। अनेक

उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि भारत भौतिक तथा अभौतिक दृष्टि से दूसरों को देने के लिए सक्षम है। उन्होंने कहा कि जहाँ एक ओर उपभोक्तावाद और आतंकवाद दिखायी देता है तो दूसरी ओर भारत एक सांस्कृतिक राजधानी के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि भारत को भारत की नज़र से देखने की आवश्यकता है । महात्मा गांधी तथा धर्मपाल की दृष्टि हमें अपनी उज्ज्वल परंपरा की ओर देखने के लिए मार्ग दिखाती है।

अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के लिए हमें भारतीय सभ्यता दृष्टि की समझ आवश्यक है। हम भोग और त्याग को लेकर चलते है । उन्होंने सभ्यता दृष्टि को वैकल्पिक बताते हुए कहा कि भारत को खोजने की शुरूआत विश्वविद्यालयों से होनी चाहिए ।

कनकमल गांधी ने कहा कि धर्मपाल जी का 25 वर्ष तक सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे हमारे परिवार के सदस्य के रूप में थे। वे जो लिखते थे उसे मैं टाइप किया करता था। स्वागत वक्तव्य में प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि विज्ञान और तकनीकी के चिंतन के साथ-साथ भारतीय परंपरा के बहाने गांधी जी और धर्मपाल पर दो दिवसीय संगोष्ठी में मंथन होगा। इस अवसर पर रूपेश

पाण्डेय द्वारा संपादित 'भारतीय सभ्यता गांधी और धर्मपाल का चिंतन' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। श्री पाण्डेय ने कहा कि धर्मपाल जी का जीवन गांधी विचारों से प्रभावित था। द

ब्यूटिफुल ट्री नामक पुस्तक के माध्यम से उन्होंने इतिहास को सामने लाया। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया तथा आभार ज्ञापन संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कार्य-परिषद की सदस्या डॉ. कुसुमलता केडिया, प्रदीप दीक्षित, राम सुब्रमण्यम सहित अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।